निराला की लम्बी कविताओं का आलोचनात्मक अध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ जयराम त्रिपाठी
सहा प्रोफेसर (हिन्दी)
हेमवती नंदन बहु राज स्नातको महा नैनी, इलाहाबाद

Received: January 26, 2019 Accepted: March 18, 2019

प्रस्तुत पुस्तक में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की लम्बी कविताओं को एक नई दृष्टि से देखा गया है। निराला की लम्बी कविताओं में कविता की जिस विधा का पालन किया गया है वह पूर्व में वर्णित काव्य की किसी कोटि में नहीं आता है इसका उल्लेख किसी काव्य शास्त्री के द्वारा नहीं किया गया है परन्तु कविता में इसके प्रादुर्भाव के पश्चात् दूसरा स्थान इस प्रकार प्रतिष्ठित हो गया कि इसके पश्चात् लम्बी कविताओं को अत्यन्त हो सम्मान के साथ लिखा जाने लगा। इसके बाद कविताओं को सामान्यतः तीन भागों में विभाजित किया गया है। महाकाव्य, खण्ड काव्य एवं मुक्तक लम्बी कवितायें इन तीनों के अंतर्गत नहीं आती। निराला के द्वारा लम्बी कविता के रूप में लिखी गई–राम की शक्तिपूजा, सरोज स्मृति, ककुरमुत्ता और तुलसीदास के पश्चात् इस प्रकार की लम्बी कविताओं का स्थान हिन्दी कविताओं में निश्चित हो गया। इसी क्रम में बढ़ाते हुए अज्ञेय ने अपनी लम्बी कविता **'असाध्य वीणा'** लिखी। गजानन माधव मुक्तिबोध ने **ब्रह्मराक्षस** और **भूल–गलती** लिखीं। धर्मवीर भारती का कनुप्रिया, कुंवर नारायण की आत्मजयी और गिरिजा कुमार माथुर का कल्पांतर इसी क्रम की रचना है। इस सभी रचनाओं में पूर्व वर्णित प्रबन्ध संरचना का कोई लक्षण दृष्टिगत नहीं होती है, इसका अर्थ है कि इन कविताओं की रचना परंपरा से अलग मानो जा सकती है, इन रचनाओं का वैशिष्ट्य का औदार्य इस प्रकार का था कि इसे लिखने के पश्चात् निराला को बिना महाकाव्य रचना के ही महाकवि का दर्जा प्राप्त हो गया। नई कविता के पश्चात् आलोचकों ने इन कविताओं के अध्ययन पर ध्यान आकृष्ट किया। इन पर बहुत से विद्वानों न लिखा है। इस प्रकार लिखी गई समीक्षा समीक्षा साहित्य को भी एक आयाम प्रदान करती है। समीक्षा साहित्य के अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि इन कविताओं में कथानक मिथकीय होते हुए भी दृष्टि आधुनिक है।

इन कविताओं के अध्ययन के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि इनके कलेवर और आत्मा को सही एंग से समझने के लिए कवि का जीवन संघर्ष समझना आवश्यक है। राम की शक्तिपूजा कविता में वर्णित राम का संघर्ष 'धिक् जीवन जो पाता आया विरोध' कहाँ जाकर निराला का स्वयं का संघर्ष है। राम की शक्तिपूजा के साथ ही सरोज स्मृति के अध्ययन करने पर यह सिद्ध भी हो जाता है। निराला इतिहास–पुराण की घटनाओं से इस रूप में कथानक ग्रहण करते हैं कि वह बिना इतिहास को क्षति पहुँचाये अपना अस्तित्व निर्मित कर लेता है। बड़े कवि का यह गुण भी है कि वह नवनवोन्मेष प्रस्तुत करें। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में निराला को पंत और जयशंकर प्रसाद के बाद में महत्व प्रदान किया है कालक्रम में निराला को छायावाद में पंत से अधिक सम्मान प्राप्त हुआ, वस्तुतः आचार्य शुक्ल की आलोचनात्मक परिकल्पना में इतिवृत्तात्मक कथा काव्य के अतिरिक्त कविता को उचित दर्जा प्राप्त नहीं होता था। बंगाल में कृत्तिवास रामायण में वर्णित कथा के आधार पर लिखी गई रचना रामशक्ति का आधार है और यह भी एक तथ्य है कि इस प्रकार की रचना बंगला भाषा में भी नहीं लिखी जा सकी है। सबसे पहले विदुषी लेखिका द्वारा 'प्रेयसी' कविता को समीक्षा हेतु चयनित किया है। प्रेयसी सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखी गई प्रारंभिक कविताओं में से एक है। इस कविता में निराला ने प्रेमिका की दृष्टि से कविता में उनका वर्णन किया है। इस कविता में निराला ने छायावाद के मानकों के अनुरूप ही काव्य कला को विकसित किया जाता है, छायावाद की सभी विशेषतायें इसमें स्पष्ट दिखाई देती है, भाषा का प्रवाह अद्भुत है सम्पूर्ण कविता तत्सम शब्दों और प्रसाद गुण से युक्त है ऐसा लगता है कि प्रारंभिक भाग रीतिकाल के संस्कारों या जुही की कली से प्रभाव ग्रहण कर लिखी गई है। प्रेयसी अपनी युवास्वस्था का वर्णन प्रकृति के माध्यम से करती है वह शरीर के लिए वृक्ष का उपमान उपस्थित करती है, तरु–तन। सम्पूर्ण कविता प्रेम के रोमांच का अनुभव कराती है।

दूसरे अध्याय में लेखिका ने समीक्षा हेतु निराला की लम्बी कविता तुलसीदास का चयन किया है। तुलसीदास के सम्बन्ध में यह सर्वविदित है कि वे अपनी धर्मपत्नी के प्रति आसक्त थे ओर उनकी फटकार के बाद उनको अपनी गलती का अनुभव हुआ और एक सामान्य व्यक्ति सम्पूर्ण साहित्य और धार्मिक जगत से सूर्य की तरह प्रकाशमान हो गया। तुलसीदास का काल भारतीय इतिहास में अकबर के आस–पास का समय है जो यद्यपि भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक समरसता का काल है फिर भी निराला ने लिखा 'भारत के नभ पर तमस्तूर्य' इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि वह इस्लाम धर्मावलम्बी शासकों को ग्लेच्छ मानते थे और अपने लेखन द्वारा वह भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के उत्थान हेतु समस्त लेखन समर्पित कर दिया।

तीसरे अध्याय में लेखिका ने निराला की सबसे प्रतिष्ठित मानी जाने वाली कविता राम की शक्ति पूजा को चयनित किया है। यह कविता राम के द्वारा शक्ति अथवा दुर्गा की आराधना का कथानक है आश्चर्यजनक ही है कि इस प्रकार की ओजस्वी कविता उस स्थल में नहीं रची जा पाई है जो दुर्गा–पूजा का केन्द्र है। सम्पूर्ण कविता ओज से ओत–प्रोत और वीर रस से परिपूर्ण है। कविता की भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है बल्कि आलोचकों ने इस प्रकार की भाषा को काव्य के लिए

अहितकर माना है। इस कविता में मुख्य कथा के साथ–साथ अवांतर कथायें और क्षेपक कथायें भी चलती रहती हैं परन्तु कहीं भी यह कविता के मूल प्रवाह को नष्ट नहीं करती है। सम्पूर्ण कविता एक सुव्यवस्थित शब्द बंध में जड़ी हुई है जिसे आलोचकों ने वीर छंद का नाम दिया है। इस कथानक में कुछ ऐसे प्रसंग भी है जो काल्पनिक की श्रेणी में आते है परन्तु संरचना में वह इस प्रकार पिरोये गए हैं कि वह उसमें नीर–क्षीर की तरह ही मिल गए हैं। रचना के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह एक श्रेष्ठ कविता है।

चतुर्थ अध्याय में लेखिका ने चयन किया है निराला की लम्बी कविता 'सरोज स्मृति का'। यह कविता निराला ने अपनी पुत्री की मृत्यु के पश्चात् लिखी थी इसे आलोचकों ने शोक गीति कहा है। इसमें निराला ने अपने जीवन से जुड़े हुए संघर्ष एवं विसंगतियों को पूरी ईमानदारी के साथ उद्घाटित किया है। उन्होंने अपनी आर्थिक दशा को अपनी विपन्नता को बयान किया है आर एक पिता को विवाह आदि में जो परेशानियाँ होती हैं उसके बिना संकोच के वर्णित किया है। यह कविता एक प्रकार का रुदन है।

पंचम अध्याय में लेखिका ने कविता बनवेला को समीक्षित किया है यह कविता इस प्रकार दिखाई पड़ती है जैसे निराला अपने संघर्ष को मूर्त रूप प्रदान कर रहे हों 'मैं रण में गया हार, सोचा न कभी भविष्य, की रचना पर चल रहे सभी' वह यह जीवन संग्राम क्यों हार गये–इसका कारण वह यह मानते हैं कि वह अपने स्वयं की भविष्य रचना में स्व को निर्णायक मानने के लिए तैयार नहीं होते अथवा वह यह मानने के लिए तैयार नहीं होते कि जीवन को सुखमय बनाने के लिए जीवन मूल्यों से समझौता किया जाना आवश्यक है।

छठे अध्याय में समीक्षा के लिए कविता कुकुरमुत्ता को लिया गया है। यह सम्पूर्णतः एक प्रयोगवाद प्रभावित कविता है इसमें निराला ने गुलाब को शोषक का प्रतीक बनाया है और कुकुरमुत्ता को उस शोषित का प्रतीक सिद्ध किया है जो शोषण के खिलाफ आवाज उठाना प्रारंभ कर चुका है। इसकी भाषा अन्य कविताओं की तुलना में बोलचाल की एवं जन सामान्य के रूप में दिखाई पड़ती है। यह जन को लोक प्रति भावना को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है।

इस प्रकार हम यह देखते है कि यह समीक्षा पुस्तक निराला की लम्बी कविताओं की एक स्वस्थ यात्रा कराते हुए पाठक को उनकी कविताओं से परिचित कराती है। इसमें यह भी दिखाई पड़ता है कि अन्य भाषाओं की तुलना में जन सामान्य के वर्णन के लिए भाषा उसी की होनी चाहिए न कि अभिजात्य की। कविताओं की संरचना इस प्रकर है कि वह पाठक को अपने प्रभाव में ले लेता है। हम यह देखते हैं जो भाषा **प्रेयसी** में है उसके ठीक विपरीत या उससे भिन्न **कुकुरमुत्ता** में है। प्रारंभ की रचनाओं का स्वरूप अभिजात के समीप है जबकि बाद की रचनाओं का लोक के।